हिन्दी नाटकों में सामाजिक यथार्थ का बोध

डॉ० विनय कुमार
सहायक व्याख्याता, हिन्दी
गुरू नानक खालसा कॉलेज
यमुनानगर

शोधालेख सार : आधुनिक समय में बदलते परिवेश में मनुष्य–जीवन में जिस तरह से परिवर्तन आते हैं उसी प्रकार साहित्य भी अपना पारंपरिक रूप परिवेश के अनुसार बदलता रहता है तथा प्रचलित मानदंडों को त्यागकर नवीन मानदंडों की स्थापना करता है। जैसे ही आदर्शवादी धारणाओं को त्याग करके स्वच्छंदतावादी कवियों ने विद्रोह किया और प्रकृति का मानवीकरण करके वास्तववादी मान्यताओं की स्थापना की। ठीक इसी तरह साहित्य की प्रत्येक विधा में परिवेश के अनुसार परिवर्तन पाया जाता है। नाटक विधा भी इसके लिए अपवाद नहीं है। हिन्दी नाटकों में नाटककारों ने प्रायः सामाजिक परिप्रेक्ष्य में आये परिवर्तनों को उद्घाटित करने का प्रयास किया है, जिनमें गाँव, कस्बा, नगर तथा महानगरों की अनुभूतियों को अलग–अलग धरातल पर ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया गया है जिसमें पति–पत्नी के पारस्परिक संबंध भी उद्घाटित है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिन्दी नाटकों में सामाजिक यथार्थ बोध का विवेचन किया गया है।

मूल शब्द : संस्कृति, यथार्थ बोध, भ्रष्टाचार, शिक्षित बेरोजगार, धार्मिक विभिन्नता।

भूमिका : प्रस्तुत विवेचन में नाटक विद्या के संदर्भ में शहरी और ग्रामीण संस्कृति में पाया गया अंतर पेश किया गया है। इस शोध में शिक्षित बेरोजगार युवकों तथा अभावग्रस्त परिवारों की यथार्थ परिस्थिति का चित्रण अंकित किया गया है। प्रचलित न्याय व्यवस्था तथा शिक्षा प्रणाली में व्याप्त भ्रष्टाचार नाटकों में अंकित किया गया है तथा धार्मिक विभिन्नता में विशेषतः हिन्दू, मुस्लिमों का संघर्ष, सहानुभूतिशून्य लोगों की स्वार्थपरता तथा युवा पीढ़ी की विद्रोही भावना उद्घाटित की गयी है। आज के युग में भाषावाद के कारण उत्पन्न हुआ विघटन, आज का नारी जीवन, दहेज प्रथा तथा शहरों में पायी गयी श्रमिकों की दयनीय दशा चित्रित करने का नाटककारों का प्रयास समर्थ एवं सराहनीय है।

आधुनिक समय में समाज के मूल्यों में आये बदलाव के कारण उत्पन्न पारिवारिक संघर्ष, आजकल के युवक–युवतियों के पारस्परिक संबंध, जीवन मूल्यों का पतन तथा राजनीति का शिक्षा क्षेत्र पर पड़ा प्रभाव नाटकों में झलकता हुआ नजर आता है। विशिष्ट और सामान्य लोगों का जीवन, स्मगलरों की राजनीति से निकटता, राजनीतिज्ञों का उनसे आपसी गठजोड़ तथा नेताओं के भ्रष्टाचार नाटकों में अंकित है। बीमारी, भुखमरी, हड़ताल, मालिक–मजदूर का संघर्ष भी हिन्दी नाटकों में समर्थ रूप से चित्रित किया गया है।

हिन्दी नाटकों में सामाजिक जीवन से सम्बन्धित सभी प्रकार की जटिल समस्याओं और अनसुलझी गुत्थियों को आलोकित किया गया है। सामाजिक परिवेश के अंतर्गत आये परिवर्तनों का यथार्थ चित्रण सामाजिक नाटकों का मूल उद्देश्य होता है। परंपरागत जमींदारी प्रथा, जातीयता, वर्गवाद और दहेज प्रथा पर प्रकाश डालना सामाजिक नाटकों की प्रधान विशेषता है। विवाह के संदर्भ में जो परिवर्तन हुए हैं जैसे – विधवा विवाह, प्रेम विवाह, अंतर्जातीय विवाह आदि का प्रस्तुतीकरण सामाजिक नाटकों में दृष्टिगोचर होता है। सामाजिक नाटककार वैज्ञानिक विकास के कारण हुए परिवर्तन जैसे मानव की यांत्रिकता, संबंधहीनता, पारिवारिक विघटन और प्रत्येक क्षेत्र में निर्माण हुए असंतोष को प्रस्तुत करता है। स्त्रियों से संबंधित सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को आलोकित करना आजकल के नाटककारों की खासियत रही है। अतः स्त्रियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता, स्त्री पुरूष संबंधों में आये बदलाव, पति–पत्नी संबंध, भाई–बहन और प्रेमी–प्रेमिका के संबंधों को प्रस्तुत करने की सामाजिक नाटककारों की प्रवृति रही है। इसके साथ–साथ औद्योगिक विकास के कारण आये बदलाव में विशेषतः कारखानादार–कर्मचारी संबंध और पर्यावरण से संबंधित अनेक प्रकार की समस्याओं का चित्रण सामाजिक नाटकों में दिखायी देता है।

आज सभी साहित्यकार वर्तमान सामाजिक परिवेश में आये बदलाव व प्रभाव को आलोकित करने में पीछे नहीं हटते हैं। इसलिए सामाजिक समस्याओं को तीव्रता के साथ आलोकित करना विशेषतः समाज की जर्जर अवस्था, धार्मिक, भाषिक और प्रांतीय संकीर्णता का चित्रण करना इन नाटकों का उद्देश्य प्रतीत होता है। नाटककारों की रूचि प्रायः पति–पत्नी संबंध, विवाह का यथार्थ रूप आदि प्रस्तुत करने में ही दृष्टिगोचर होती है। राजेन्द्र कुमार वर्मा का 'एक राग दो स्वर' नाटक पति–पत्नी के संबंधों पर प्रकाश डालता है। आजकल के पति–पत्नी समय–समय पर अपने अधिकारों पर डटे रहते हैं और कभी–कभी आपस में झगड़े भी करते रहते हैं। ऐसे पति–पत्नी के आपसी व्यवहारों को व्यक्त करने वाली साहित्यिक विद्या नाटक ही है।

इसी तरह लालचंद जैन का 'न्याय' आज की न्याय पद्धति पर प्रकाश डालने वाला नाटक है। साथ ही शिक्षित बेकार युवकों की मनोवृत्ति तथा सरकारी दफ्तरों में चलने वाले भ्रष्टाचार को भी प्रस्तुत करता है। आजकल शिक्षित युवक नौकरी के लिए दर–दर भटकते हैं, परंतु नौकरी नहीं मिलती। 'न्याय' नाटक में सुनील नामक पात्र एक शिक्षित युवक है, जो चार सालों से नौकरी की तलाश में घुमता रहता है परंतु नौकरी नहीं मिलती। नाटककार ने आज की यह यथार्थ स्थिति इस प्रकार आलोकित की है'' तुम सोचो, चार वर्ष हो गये। दूर–दूर तक कितने ही दफ्तरों की खाक छान डाली, दम भर कर कोशिश की, अपार कष्ट सहे, किंतु कहीं कोई आश्रय नहीं मिला। फर्स्ट डिविजन में बी०ए० पास किया उसका क्या, उसका कोई परिणाम .....।

'रूपया तुम्हें खा गया' नाटक भगवतीचरण वर्मा जी का सामाजिक समस्यामूलक नाटक है। नाटककार ने नाटक के माध्यम से पूँजीवादी संस्कृति का यथार्थ रूप लोगों के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। रूपये की शक्ति को मानने वाले लोगों के लिए अन्य चीजों का कोई महत्त्व नहीं है। ऐसे लोगों की प्रवृत्ति पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

यहां यह बात भी ध्यान रखने योग्य है कि केवल अशिक्षित लोग ही जाति, भाषा और प्रांत को लेकर संघर्ष नहीं करते, बल्कि शिक्षित लोग भी जाति, धर्म, भाषा और प्रांतीयता को लेकर दंगे करते हैं। विशेषतः शादी–ब्याह के मामले में तो जात, धर्म और प्रांत देखा जाता है। 'हम एक हैं' नाटक में नाटककार ने यह भेद प्रस्तुत किया है।

इसी प्रकार अन्य समस्याओं को लेकर भी नाटकों की रचना हुई है। डॉ० चंद्र का 'आकाश झुक गया' नाटक आज की शिक्षा प्रणाली में व्याप्त भ्रष्टाचार को प्रस्तुत करता है और साथ–साथ जनता को झूठे वादों का लालच देने वाले नेताओं की असलियत पर भी प्रकाश डालता है।

डॉ० चंद्र लिखित 'भावना के पीछे' नाटक आधुनिक स्त्री का व्यक्तित्व और उसके व्यवहारों को चित्रित करने वाला नाटक है। खास करके स्त्री–पुरूषों के आपसी व्यवहारों को बेपर्दा करने में नाटक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। डॉ० चंद्र द्वारा लिखित अन्य नाटक 'भूमि की ओर' में दहेज प्रथा की समस्या को उजागर करता है। धन के लोभी शादी में अगर दहेज न मिले तो लड़कियों को मार डालते हैं व जला भी देते हैं। कहीं–कहीं लड़की कुरूप हो तो उसके पिता जी लड़के को दहेज देकर उसकी शादी करवाते हैं।

रमेश बक्षीजी ने 'देवयानी का कहना हैं 'नाटक में आधुनिक पीढ़ी की विशेषताओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। उन्होंने विशेषतः आज की युवतियों का बंधनमुक्त संचार, आचार, विचार और युवकों के साथ उनके संबंधों को प्रस्तुत किया है।

अंततः उपरोक्त विवेचन के बाद हम कह सकते हैं कि आज समस्त सामाजिक परिवेश में आये परिवर्तनों, उनके परिणामों के उतार–चढ़ावों को तथा प्रत्येक क्षेत्र की हलचलों को नाटककारों ने समर्थ तरीके से चित्रित किया है। इसलिए हम इस बात को नकार नहीं सकते कि वर्तमान युग के नाटक सामाजिक समस्याओं का यथार्थ बोध कराते हैं।

सहायक ग्रंथ :

1. ओझा, मांधाता – हिन्दी समस्या नाटक।
2. खंडेलवाल, डॉ० जयशंकर प्रसाद – हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ।
3. ओझा, डॉ० दशरथ – आज का हिन्दी नाटकः प्रगति और विकास।
4. त्रिपाठी, नरेन्द्रनाथ – हिन्दी नाटक – बदलते आयाम।
5. डॉ० गोरखनाथ – माने–सत्तरोत्तरी हिन्दी नाटकों में चित्रित यथार्थ।